6 जयशंकर प्रसाद

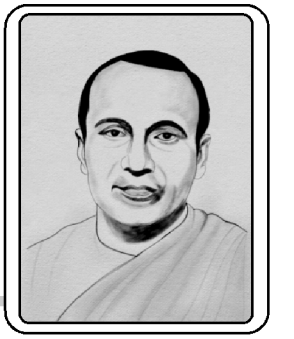

जीवन-परिचय—जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी के प्रसिद्ध 'सुँघनी साहु' परिवार में सन् 1889 ई० में हुआ था। पिता बाबू देवीप्रसाद एवं बड़े भाई का स्वर्गवास इनके बाल्यकाल में ही हो गया था। पिता ने प्रसाद की शिक्षा-दीक्षा की उचित व्यवस्था की थी, किन्तु उनके निधन के पश्चात् प्रसाद जी की शिक्षा का क्रम नियमित रूप से नहीं चल सका। पारिवारिक व्यवसाय का सारा बोझ इन्हीं को उठाना पड़ा। घर पर ही इन्होंने अंग्रेजी, हिन्दी, बँगला एवं संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। प्रसाद जी को जीवन में अनेक विपत्तियों का सामना करना पड़ा। तीन पत्नियों की मृत्यु हुई, अनेक मुकदमे लड़ने पड़े। अपने पैतृक कार्य को करते हुए भी इन्होंने अपने भीतर काव्य-प्रेरणा को जीवित रखा। इनका जीवन बहुत सरल था। सभा-सम्मेलनों की भीड़ से ये दूर ही रहा करते थे। अत्यधिक श्रम तथा जीवन के अन्तिम दिनों में राजयक्ष्मा से पीड़ित रहने के कारण 1937 ई० को 48 वर्ष की अल्पायु में ही इनका निधन हो गया।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—30 जनवरी, 1889 ई०।
- **जन्म-स्थान**—वाराणसी (उ०प्र०)।
- **पिता**—बाबू देवीप्रसाद।
- **मृत्यु**—14 जनवरी, 1937 ई०।
- **भाषा**—खड़ीबोली।
- छायावादी युग के प्रवर्तक।

साहित्यिक सेवाएँ—प्रसाद जी आधुनिक हिन्दी काव्य के सर्वप्रथम कवि थे। इन्होंने अपनी कविताओं में सूक्ष्म अनुभूतियों का रहस्यवादी चित्रण प्रारम्भ किया, जो इनके काव्य की एक प्रमुख विशेषता है। इनके इस नवीन प्रयोग ने काव्य-जगत् में एक क्रान्ति उत्पन्न कर दी और छायावादी युग का सूत्रपात किया। इन्होंने काव्य-सृजन के साथ ही 'हंस' एवं 'इन्दु' नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन भी कराया। 'कामायनी' पर इनको 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' ने 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' प्रदान किया था।

रचनाएँ—प्रसाद जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

(1) काव्य—कामायनी—इस ग्रन्थ में जहाँ मनु और श्रद्धा को प्रलय के बाद सृष्टि-संचालक बताया गया है, वहीं दार्शनिक बिन्दु पर मनु, श्रद्धा और इड़ा के माध्यम से मानव को हृदय (श्रद्धा) और बुद्धि (इड़ा) के समन्वय का आदेश दिया गया है। **आँसू**—यह आधुनिक हिन्दी साहित्य की अनुपम धरोहर है। इसमें हृदय की व्यथा को प्रवाहयुक्त शैली में कहा गया है। **झरना**—इसमें प्रेम और सौन्दर्य के साथ प्रकृति के मनोरम रूप का भी चित्रण किया गया है। **लहर**—इसमें छायावाद का प्रौढ़तम रूप मिलता है। इसमें हृदयगत भावों के बड़े ही मार्मिक चित्र प्रस्तुत किये गये हैं।

कानन कुसुम—इसमें खड़ीबोली की छह कविताएँ तथा शेष छायावादी गीत हैं। **चित्राधार**—इसमें प्रसाद जी की प्रारम्भिक ब्रज भाषा की रचनाएँ संकलित हैं। **महाराणा का महत्त्व**, **प्रेमपथिक** इनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं।

(2) नाटक—प्रसाद जी एक सफल नाटक लेखक भी थे। आपके नाटकों में 'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी', 'कामना', 'जनमेजय का नागयज्ञ', 'एक घूँट', 'विशाखा', 'करुणालय', 'राज्यश्री', 'अजातशत्रु' तथा 'प्रायश्चित्त' मुख्य हैं।

(3) उपन्यास—आपने तीन उपन्यास लिखे—(1) कंकाल, (2) तितली और (3) इरावती (अपूर्ण)।

(4) कहानी संग्रह—आपने उत्कृष्ट कहानियाँ भी लिखीं। इन कहानियों में भारत के अतीत का गौरव साकार हो उठता है। इनके कहानी संग्रह हैं—'प्रतिध्वनि', 'आँधी', 'इन्द्रजाल', 'आकाशदीप' एवं 'छाया'।

(5) निबन्ध—काव्य और कला, रहस्यवाद, रस, नाटकों में रस का प्रयोग, नाटकों में आरंभ, रंगमंच, आरंभिक-पाठ काव्य, यथार्थ वाद और छायावाद पहले 'हंस' में प्रकाशित हुए थे। बाद में पुस्तकाकार ''काव्य और कला और अन्य निबन्ध'' नाम से संपादित होकर प्रकाशित हुए। बाद में उन्होंने शोधपरक ऐतिहासिक निबन्ध यथा : सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, प्राचीन आर्यावर्त और उसका प्रथम सम्राट आदि भी लिखे।

(6) चम्पू—'प्रसाद' ने कुल तीन चम्पू लिखे हैं। 'उर्वशी चम्पू' (1906 ई॰), 'बभ्रुवाहन', 'उर्वशी'।

भाषा-शैली—प्रसाद जी की भाषा पूर्णतः साहित्यिक, परिमार्जित एवं परिष्कृत है। भाषा प्रवाहयुक्त होते हुए भी संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली है, जिसमें सर्वत्र ओज एवं माधुर्य गुण विद्यमान है। अपने सूक्ष्म भावों को व्यक्त करने के लिए प्रसाद जी ने लक्षणा एवं व्यंजना का आश्रय लिया है। प्रसाद जी की शैली काव्यात्मक चमत्कारों से परिपूर्ण है। संगीतात्मकता एवं लय पर आधारित इनकी शैली अत्यन्त सरस एवं मधुर है।

♦

पुनर्मिलन

चौंक उठी अपने विचार से
कुछ दूरागत ध्वनि सुनती,
इस निस्तब्ध निशा में कोई
चली आ रही है कहती—
"अरे बता दो मुझे दया कर
कहाँ प्रवासी है मेरा?
उसी बावले से मिलने को
डाल रही हूँ मैं फेरा।
रूठ गया था अपनेपन से
अपना सकी न उसको मैं,
वह तो मेरा अपना ही था
भला मनाती किसको मैं!
यही भूल अब शूल सदृश हो,
साल रही उर में मेरे,
कैसे पाऊँगी उसको मैं
कोई आकर कह दे रे!"
इड़ा उठी, दिख पड़ा राज-पथ
धुँधली-सी छाया चलती,
वाणी में थी करुण वेदना
वह पुकार जैसी जलती।
शिथिल शरीर वसन विशृंखल
कबरी अधिक अधीर खुली,
छिन्न पत्र मकरन्द लुटी-सी
ज्यों मुरझायी हुई कली।
नव कोमल अवलम्ब साथ में
वय किशोर उँगली पकड़े,
चला आ रहा मौन धैर्य-सा
अपनी माता को जकड़े।
थके हुए थे दुखी बटोही,
वे दोनों ही माँ-बेटे,
खोज रहे थे भूले मनु को
जो घायल हो कर लेटे।

इड़ा आज कुछ द्रवित हो रही
दुखियों को देखा उसने,
पहुँची पास और फिर पूछा
"तुमको बिसराया किसने?
इस रजनी में कहाँ भटकती
जाओगी तुम बोलो तो,
बैठो आज अधिक चंचल हूँ
व्यथा-गाँठ निज खोलो तो।
जीवन की लम्बी यात्रा में
खोए भी हैं मिल जाते,
जीवन है तो कभी मिलन है
कट जाती दुख की रातें।"
श्रद्धा रुकी कुमार श्रान्त था
मिलता है विश्राम यहीं,
चली इड़ा के साथ जहाँ पर
वह्नि शिखा-प्रज्वलित रही।
सहसा धधकी वेदी-ज्वाला
मण्डप आलोकित करती,
कामायनी देख पायी कुछ
पहुँची उस तक डग भरती।
और वही मनु! घायल सचमुच
तो क्या सच्चा स्वप्न रहा?
'आह प्राण प्रिय! यह क्या? तुम यों?"
घुला हृदय, बन नीर बहा।
इड़ा चकित, श्रद्धा आ बैठी
वह थी मनु को सहलाती,
अनुलेपन-सा मधुर स्पर्श था
व्यथा भला क्यों रह जाती?
उस मूर्च्छित नीरवता में कुछ
हलके से स्पन्दन आये,

आँखें खुलीं चार कोनों में
चार बिन्दु आकर छाये।
उधर कुमार देखता ऊँचे,
मन्दिर, मण्डप, वेदी को,
यह सब क्या है नया मनोहर
कैसे ये लगते जी को?
माँ ने कहा 'अरे आ तू भी
देख पिता हैं पड़े हुए'
'पिता! आ गया लो' यह कहते
उसके रोएँ खड़े हुए।
'माँ जल दे, कुछ प्यासे होंगे
क्या बैठी कर रही यहाँ?'
मुखर हो गया सूना मण्डप
यह सजीवता रही कहाँ?
आत्मीयता घुली उस घर में
छोटा-सा परिवार बना,
छाया एक मधुर स्वर उस पर
श्रद्धा का संगीत बना।

(कामायनी के 'निर्वेद' सर्ग से)

अभ्यास प्रश्न

● विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्यगत सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—

(अ) चौंक उठी·····मैं फेरा।

(ब) रूठ गया था·····कह दे रे।

(स) इड़ा आज·····खोलो तो।

(द) श्रद्धा रुकी·····सच्चा स्वप्न रहा।

(य) और वही मनु·····रह जाती?

(र) मुखर हो गया·····संगीत बना।

2. जयशंकर प्रसाद की जीवनी एवं रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा जयशंकर प्रसाद की साहित्यिक सेवाओं एवं भाषा-शैली का उल्लेख कीजिए।

3. 'पुनर्मिलन' काव्यांश का सारांश एवं मूलभाव अपने शब्दों में लिखिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रसाद के प्रकृति-चित्रण पर टिप्पणी लिखिए।
2. इड़ा को कामायनी 'धुँधली-सी छाया' क्यों लग रही थी?
3. विरहिणी के रूप में कामायनी का चित्रण कवि ने किस प्रकार किया है?
4. 'पुनर्मिलन' काव्यांश के मूलभाव से सम्बन्धित चार वाक्य लिखिए।
5. कामायनी तथा उसके पुत्र के मनु से पुनर्मिलन का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
6. जयशंकर प्रसाद की भाषा-शैली लिखिए।
7. 'पुनर्मिलन' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।

● अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. जयशंकर प्रसाद किस काल के कवि हैं?
2. जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य का नाम लिखिए।
3. जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित दो काव्य-ग्रन्थों के नाम लिखिए।
4. जयशंकर प्रसाद को किस युग का प्रवर्तक माना जाता है?
5. श्रद्धा कौन थी?
6. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये—
   (अ) श्रद्धा के पुत्र का नाम मानव है। ( )
   (ब) जयशंकर प्रसाद छायावादी कवि हैं। ( )
   (स) पुनर्मिलन कामायनी 'निर्वेद सर्ग' से उद्धृत है। ( )

● काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
   (अ) मुखर हो गया सूना मण्डप।
   (ब) आत्मीयता घुली उस घर में, छोटा-सा परिवार बना।
2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस का नाम बताइए—
   (अ) धुला हृदय, बन नीर बहा।
   (ब) इड़ा आज कुछ द्रवित हो रही दुखियों को देखा उसने।
3. 'मुखर हो गया सूना मण्डप' में कौन-सा अलंकार है?

● आन्तरिक मूल्यांकन

(1) पाठ की काव्य-पंक्तियों के माध्यम से प्रसाद जी के व्यक्तित्व की जो झलक मिलती है, उसे अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।

(2) जयशंकर द्वारा लिखित नाटकों की एक सूची बनाइए।

♦